❀ श्रीसद्गुरवेनमः । श्रीजानकीवल्लभाय नमः ❀
❀ श्रीसर्वेश्वरी श्रीमतीचन्द्रकलायै नमः ❀
❀ श्रीहनुमतेनमः ❀

* श्रीविनय कान्ति *

* मंजु छन्द *

श्रीशत सहस सहित श्रीगुरु पद पदुम पराग प्रकाशी ।
प्रणमों प्रीति प्रतीति प्रणय पन धारि धारणा खाशी ॥
जयति जानकी जान नाम रस रूप विभास विभाशी ।
युगलअनन्य शरण सेवक पर पूरन कृपा सुपाशी ॥ १ ॥
श्रीगुरु गुन गननीय शोक समनीय सुधाकर सांचो ।
पीवत परम प्रमोद प्रभापति पावत परहरि पांचो ॥
रोग शोग भव भोग भावना मूल अभाव न रांचो ।
युगलअनन्य शरण सतगुरु भजि फिरि बहु नाच न नांचो ॥ २ ॥
चिन्तामनि सुरधेनु अमर तरु पारस सुधा हजारों ।
मधुर बचन रचना विचित्र पर वार वार नित वारों ॥
महा मोद मंदिर निवास प्रद केवल कृपा निहारों ।
युगलअनन्य शरण सिय पिय से सरस सुगुरु उर धारों ॥ ३ ॥
श्रीसतगुरु निज नेक नजर युत जब जेहि जन अवलोकें ।
तेहि छन ताहि तरंग रंग रस रूप सिंधु विन रोकें ॥
फीके लगे विश्व वानिक सब मधुर नाम नव नोकें ।
युगलअनन्यशरण सियवर पुर पावत सतत अशोकें ॥ ४ ॥
परम परेश सुदेश सरस उपदेश विशेष बतायो ।
शेष महेश गनेश ध्येय गुन अनुपम रहस जतायो ॥

लेश विदेश भदेश रह्यो नहिं नेह नगर दरसायो।
युगलअनन्यशरण सतगुरु श्री चरन सरोज मनायो ॥ ५ ॥
कोटिन कलप विकलप सङ्कलप करत कलेश कमायो।
काम कामिनी कलिल कोह कलि कायर करन विकायो ॥
कीमत कहर लहर लाघ्यो भल लालच लोभ ललायो।
युगलअनन्यशरण सतगुरु पद परसि पुनीत कहायो ॥ ६ ॥
निज स्वरूप पररूप भूप रस छांह धूप ते न्यारो।
बीज विमल वैराग्य बोध रति रस निधि नाम पियारो ॥
भाव चाव दिल दाव दमक दुति विपिनि बिनोद विहारो।
युगलअनन्यशरण श्रीगुरु पद पाय सकल सुख सारो ॥ ७ ॥
श्रीगुरु चरन चारु चिंतन तजि अपर भरोस न मेरे।
सांची कहौं सुवेद भेद बिनु खेद निचोरि निवेरे ॥
सिय बल्लभ सें सरस सुसतगुरु सकल भांति हिय हेरे।
युगलअनन्यशरण तिनकी करुना ते सहित उजेरे ॥ ८ ॥
श्रीगुरु चरन सरोज ओज प्रद सबों रोज हिय ध्यावों।
रूप अनूप दम्पती छविमय मधुर खोज विन पावों ॥
साधन सकल सदोष उपाधन बाधन दूर बहावों।
युगलअनन्यशरण पराग पद पंकज प्रेम बढ़ावों ॥ ९ ॥
नख बिधु चारु चन्द्रिका निर्मल निरखि ताप तम नासे।
युगल चरित रस रहस भरित नित चित हित सहित प्रकाशे ॥
श्रीप्रद गुरु करुना दृग देखत विविधि विहार विलाशें।
युगलअनन्यशरण प्रतिभा पर प्रगट परावर भासें ॥ १० ॥

श्रीसतगुरु आधीन ज्ञान वर विभव समूह सोहाये ।
भजन भेद गत खेद विलच्छन सोउ श्रीचरन धेआये ॥
विमल वेद वानी विकाश निर्वेद कृपा बल पाये ।
युगलानन्य शरण सतगुरु गुन गन गरीय गिर गाये ॥११॥
लोहकार हाटक कारक तिमि दारुकार गुन जानो ।
वसन करन सिकलीगर गुन गति प्रगट हृदय अनुमानो ॥
भृंग विचित्र चरित चन्दन चहि श्रीगुरु अधिक प्रमानो ।
युगलअनन्यशरण लघुतर नर राव होत सुख खानो ॥१२॥
श्रीरघुवीर धीरहूँ ते गुरु रूप विशेष बताये ।
जाते अंध तिमिर दूरी करि लाल ललाम लखाये ॥
डोलत रहे कठिन कर्मन बस सो अब अचल कराये ।
युगलअनन्यशरण सतगुरु वर विरद अगोचर गाये ॥१३॥
श्रीगुरु बचन विलास श्रवन करि सहज स्वरूप सम्हारी ।
संशय लेश रह्यो नाहीं कछु कठिन कलंक निवारी ॥
सगुन अगुन भल भेद लाभ लहि विषय वासना वारी ।
युगलअनन्यशरण सतगुरु की बार बार बलिहारी ॥१४॥
अति समीप संतत अन्तर्यामी हित कबहुँ न कीन्हीं ।
जौ लौं श्रीसतगुरु दयाल निज रहस मंत्र नहि दीन्हीं ॥
चौराशी लख जोनि जनमि मम सङ्ग रंग रस लीन्हीं ।
युगलअनन्यशरण श्यामहुँ तें श्रीसतगुरु गति झीनी ॥१५॥
कृपा कटाच्छ कोर कीन्हे बिन कैसे जीव उधरते ।
महा मोह परिवार धार दुख कौनी भाँति उतरते ॥

काम, क्रोध, वर बोध विनाशक ये सठ कहु किमि मरते ।
युगलअनन्यशरण जो पै श्रीगुरु नहि बांह पकरते ॥१६॥
अधम उधारन तारन संसृति सरित पोत गुरु ध्याना ।
नाम ललाम सकृत निकसत मुख नसत मोह मद माना ॥
चरनोदक प्रसाद पाये पर पावत रस रसखाना ।
युगलअनन्यशरण संतत गुरु बानी सुनि सरसाना ॥१७॥
श्रीसतगुरु करुनानिधान नित दीजे इह बरदाना ।
सियवर चरन सरोज छोड़ि मन मधुप न करे पयाना ॥
रसना नवल नाम झरना सम श्रवे अखंड विधाना ।
युगलअनन्यशरण सनेह सर सूखत रहे न प्राना ॥१८॥
महा मोह तम तोम तमो गुन पूरन हृदय हमारो ।
श्रीगुरु आरत हरन शरन प्रद रबि शशि होय निवारो ॥
जाली जाल जगत फूली सम ममता दृग गत तारो ।
युगलानन्यशरण अंजन नव करुना देय सँवारो ॥१९॥
प्रबल लहर दरयाव आवहर भव जव जाहिर स्वामी ।
तामें बह्यो जात सङ्कट बहु बीची बीच बिरामी ॥
ग्रसित ग्राह मोहादि दाह दिल दिन दिन दरद दवामी ।
युगलअनन्यशरण शरनागत आस खास सुखधामी ॥२०॥
ज्ञान, विराग, भक्ति, साधन सब श्रीगुरु कृपा अधीना ।
बिना प्रशाद दयाल अफल सब कारज कहहिं प्रबीना ॥
अपर उपाय अपाय जय जगतीतल गुरु विनु हीना ।
युगलअनन्यशरण ताते श्रीगुरु भजु सजु सुख झीना ॥२१॥

श्रीसतगुरु पद पदुम परम पद पावन प्रगट प्रभाकर हैं ।
प्रीतम प्रान प्रनत प्रतिपालक माल कमाल सुधाकर हैं ॥
जड़ित जवाहिर बचन रचन बर बोध विवरधन आकर हैं ।
युगलअनन्यशरण लघु जन पर रैन ऐन करुनाकर हैं ॥२२॥
श्रीहनुमंत, हरीश, हरन हव आह वहिर सविखंडन हौ ।
प्रेम मयी मूरति मन रंजन सज्जन मन तन मंडन हौ ॥
ईश परेश सुदेश प्रसंसित चरित विकार विहंडन हौ ।
युगलअनन्यशरण सरनागत पालक सुभुज उदंडन हौ ॥२३॥
महाबीर रनधीर सिया रघुबीर उपाशक पक्के ।
ईश अनीश एक सम करि पुनि प्रबल छैल छवि छक्के ॥
दृढ़पन नाम ललाम श्याम सत सभा लखाई जक्के ।
युगलअनन्यशरण सेवक पर सदा सहाय कतक्के ॥२४॥
नख सिख ललित लाडते लालित पालित प्रीति पिया के हैं ।
हाजिर हूर जहूर हुजूरी नूरी जान जिया के हैं ॥
सजनी सरस सनेह सामुहे सुंदरि सुभग सिया के हैं ।
युगलअनन्यशरण जीवन हरसायत हेम हिया के हैं ॥२५॥
श्रीरघुनन्दन प्रान पियारे प्रीतम सन्त सनेही ।
बर बलवान सुजान सिरोमनि हनूमान मुद मेही ।
प्रबल प्रताप प्रभंजन सुत नुत करत देवपति जेही ॥
युगलअनन्य सजीवन मेरे आचारज गुन गेही ॥२६॥
श्रीहनुमंत सन्त शोभा सर कंज मंजु मकरंदी ।
संतत शान सिकोह सोहावन समन मान मत मंदी ॥

सम्बल बीर वर बाहु विहंडन खण्डन खल दल द्वंदी ।
युगलअनन्यशरण प्रनमत पद पंकज प्रेम पसंदी ॥२७॥
श्रवन सुनत सियलाल सुगुन दृगनीर सकल तन पुलके ।
समय समय सब भाव एक रस राश रशिक चित खुलके ॥
हरि हर विधि तिमि महा विष्णुहूँ ओर कबहुँ नहिं हुलके ।
युगलअनन्य सहायक सब विधि सुखद देवता कुलके ॥२८॥
जाके तरफ तनक ताकें तेहि तरुन तेज तन आवै ।
सियजू सहित सपरिकर सियवर बशीभूत हो जावैं ॥
प्रतिभा परम पवित्र उदय उर उज्वल ललित लसावैं ।
युगलअनन्यशरण मारुत सुत चरनन शीश नवावैं ॥२९॥
अजर अमर नर नजर निहारत निखिल नेह सुख सूझे ।
पारावार असार सकल संसार वास्तव बूझे ॥
विषम वाद सविषाद दुख दमत मादक तहाँ न जूझे ।
युगलअनन्यशरण कपिपति की कृपा कटाक्ष सरूझे ॥३०॥
कपि नायक गायक रघुपति जस जाहिर लोक अलोका ।
सहस असंख्य सुरेश मेश सम बल वैभव गत शोका ॥
सरल सुभाव अलप सेवा बस दानि महा सुख ओका ।
युगलअनन्यशरण मेरे दिशि हेरत हरि केहि रोका ॥३१॥
छाया छई रहे शिर निश दिन छटा छबीली भासे ।
काया कलिल सलिल सें सिंचित सरस सुभाव हुलासे ॥
माया मोह रहे रंचक नहिं रस निधि रहस प्रकासे ।
युगलअनन्यशरण पाया पद गहे न जात निकासे ॥३२॥

रघुनन्दन निज दूत परम मजबूत सपूत पियारे।
सिय बल्लभ नेहिन मधि रुचि सुचि मनसि बचसि दृढ़धारे॥
नाना अंतराय पावक सम ह्वै घन सघन निवारे।
युगलअनन्यशरण संशय सर भूप सुखावन हारे॥३३॥
युगल स्वरूप अनूप सुधा ह्रद मीन मनोहर शोभें।
लीन रहे रस एक टेक साजि कौनिहुँ जतन न छोभें॥
चरित भरित रस रहस मनन पल पल तेहि हित चित लोभें।
युगलअनन्यशरण वैरिन उर खाक करत खर खोभें॥३४॥
प्रबल प्रताप परेश सराहत हरसायत सत भांती।
औरन की कहु कौन कथा जहँ विधि हरि तेज सिराती॥
मारतंड शंकित घूमत दिगपाल सकल नति पांती।
युगलअनन्यशरण सर्वोपर शंतत संत सजाती॥३५॥
बांको विरद विकल्प कल्प हर कल्प कल्प प्रति गाजे।
स्वल्प नाम जन जल्प तल्प सुख सैन देत तरताजे॥
मूक बधिर चष अंग हीन सब सहज अभय लहि राजें।
युगलअनन्यशरण मम दिशि प्रभु नहिं हेरत केहि काजे॥३६॥
श्रीहनुमंत संत साहिब सियकंत सनेह सजाये हैं।
फूले बिमल बसंत कंज सम लोक कदंब लजाये हैं॥
मधुर माधुरी माँह मगन तन मन मसतान मजाये हैं।
युगलअनन्यशरण छिन छिन बर विरद निशान बजाये हैं॥३७॥
श्रीशंकर सुख रूप सीयवर रशिक रहस्य विनोदी।
अभय दानि दाता त्राता जन जाहिर सुहृद प्रमोदी॥

काशीपति गुरु ज्ञान ध्यानमय मूरति मधुर रसोदी।
युगलअनन्यशरण करुनाकर कीजे कृपा अगोदी ॥३८॥
चंदभाल छबि जाल सुरसरी धवल धार सिर सोहैं।
नैन मैन मद दमन अनूपम सहज सैन सुख दोहैं॥
चरित अपार सुधा सागर मन मीन प्रवीन लसो हैं।
युगलअनन्यशरण यांचत नित सिय पिय प्रीति रसो हैं ॥३९॥
श्रीगनेश गजवदन ज्ञान गुन सदन रदन दुति दरशी।
सुमति प्रकास हेतु अद्भुत जन जीवन सुजस विमरशी॥
मोद प्रमोद देत मोदक प्रिय प्रेम परावर परशी।
युगलअनन्यशरण कवि गन हिय मेधा विमल वितरसी ॥४०॥
मधुर मराल जान बीना वर विभव बल्लभा बानी।
प्रीति परा पुस्तक पावन प्रिय हिय सिय श्याम गुनानी॥
जापै कृपा कटाच्छ सुघन वर वृष्टि भई रस खानी।
युगलअनन्यशरण सोभा सर सार सही रससानी ॥४१॥
श्रीगिरिराज सुता शंकर उर प्रेम कला सुखमासी।
श्रीजानकी जान पद पंकज प्रीति प्रनय प्रतिमा सी॥
अन्तराय समुदाय निवारनि तारनि अचल छमा सी।
युगलअनन्यशरण दीजे बर युगलरूप रति खासी। ४२॥
श्रीअगस्त्य मुनिराज साज शुभ भजन भावना भांती।
शोक समुंद सोपि पल मधि पुनि रोकि बिंध उतपाती॥
वातापी परिताप दाप दलि सुखी किये गन ज्ञाती।
युगलअनन्यशरण सियवर श्रीमंत्र भूप छकि छाती। ४३॥

श्रीहनुमंत उदार गुनागर सुनी रहस्य सुवानी ।
पाई परानंद पल पल प्रति समुझि सनेह कहानी ॥
गिरजापति ईशान ज्ञान घन तव थल रमत अमानी ।
युगलअनन्यशरण आपन गुनि दीजे नाम निशानी ॥४४॥
श्रीवसिष्ठ सिरताज मोह हर रशिक सुतीछन नेही ।
श्रीनारद अत्री पवित्र सनकादिक गुन गन गेही ॥
वामदेव शुकदेव मुक्तवर सियवर सहज सनेही ।
युगलअनन्यशरण वंदत व्यासादि महामुनि देही ॥४५॥
श्री श्रीहाटक भवन विहारिणि सहित विहारी रंगी ।
परिकर निकर सु प्रीति प्रभाकर सदा दम्पती संगी ॥
मत्त दशा वेहोस याद में गरक फरक जग जंगी ।
युगलानन्यशरण पद पंकज नमत सनेह तरंगी ॥४६॥
प्रवल प्रताप परेश परावर प्रगट अघट पट दूरी ।
जागत जोत निशोत अलौकिक अमल अचिंत्य सुभूरी ॥
यावत आचारज जगतीतल तिन सें शत गुन सूरी ।
युगलानन्य शरण गोस्वामी प्रनमत सिर धरि धूरी ॥४७॥
कलियुग कुटिल जीव तारक आचारज मुख्य सोहाये ।
सकल शास्त्र श्रुतिसार सियावर सुजस भली विधि गाये ॥
मो से मलिन महा विषयिन को भवनिधि पार लगाये ।
युगलअनन्यशरण गोस्वामी तुलसीदास सहाये ॥४८॥
चहुँ युग तीन काल तिहुँ भुवननि माँह संत जे नामी ।
परम परेश देश ज्ञाता त्राता जन नोन हरामी ॥

राम रूप रस रँग रँगे दिन रैन पगे सुख धामी।
युगलअनन्यशरण तिन पद रज वंदत सतत नमामी ॥४९॥
सब औतार सीयबल्लभ पद कंज मंजु ते प्यारे।
ताते तिन्हहिं निरंतर प्रनमत नाता नेह निहारे॥
ब्रह्मादिक सुर सिद्ध शिरोमनि नेह निशा मतवारे।
युगल अनन्य नमत सब पद परि प्रति वासर बहु वारे ॥५०॥
श्रीकोशलपुर नमों सहित सरयू प्रिय प्रान पियारी।
पुरवाशी राशी सुख संपति नमो नमो मन हारी॥
श्रीमिथिला श्रीचित्रकूट जुत युगल सरित श्रमदारी।
युगल अनन्य जुगल परिकर मम मानस कुँज विहारी ॥५१॥
जय जय रशिकराज रामानुज रामरूप रँग रंगी।
जै श्रीसरस सुमित्रानंदन अभिनंदन सुख सँगी॥
जय अनंत भगवन्त शेष शंकरषन निधि हरि अंगी।
जयति जानकी जान नवल जस पाग विचित्र कलंगी ॥५२॥
जयति उर्मिला रमन समन संसार अपार अँगारा।
जयति अमर नर कीश हरष प्रद सहित मुनिन परिवारा॥
जयति दयाल कृपाल प्रनत हित लखनलाल सुकुमारा।
जयति गौर वर वरन हरन मन युगलअनन्य अधारा ॥५३॥
जय श्रीभरत भाव बल्लभ सिय बल्लभ सरस सनेही।
जयति धरम धुर धीर धरन निज शरन सुपद गुन गेही॥
जयति जानकी रमन नेह सर सुभग सरोज सदेही।
जयति प्रीति पालक परेश पद युगलअनन्य नितेही ॥५४॥

जयति गान गुन गर्व गरक गंधर्व गरू रँगवावन ।
जयति प्रभंजन तनय मान प्रद सद रंजन मन पावन ॥
जयति अवधवासीर छनतिछन व्रत मुनिन लजावन ।
जयति पादुका प्रिय प्रण पीजै जुगलअनन्य जुड़ावन ॥५५॥
जयति भरत भाविक भायप भल विविधि विपद्ध विनाशी ।
जयति सरस सतशील सकल प्रिय हिय मुद मोद प्रकाशी ॥
जयति स्वामिनी सीय शरन रुचि सुचि चरित्र अभिलाशी ।
जयति रामशेवक सनेह रत युगलअनन्य सुपाशी ॥५६॥
जयति लवन भट विपुल बाहु बल सागर घटज उजागर ।
जयति मधुर मथुरा प्रकाशकर रजधानी गुन आगर ॥
जयति शत्रुशालक पालक सत रहस भाँति अति नागर ।
जयति महा वैकुंठ सुपति अवतारी सब गुन सागर ॥५७॥
भरत लखन श्रीशत्रुशाल हनुमंत समेत हमेशे ।
दीजे वर बरदान इहै चित चरन सरोज प्रवेशे ॥
सियवर छोड़ि आन भासे नहिं जावत जगत जनेसे ।
युगलअनन्यशरण सीतावर नाम उछाह विशेसे ॥५८॥
जैति जानकी जान रंग रसखान प्रानपति प्यारे ।
जयति चारु चित चाह चंद जय श्रीनृपराज दुलारे ॥
जय मिथिलेशनंदनी मुख मृदु मधुर निरखि मतवारे ।
जय श्रीरशिकराज रंजन जन जुगलअनन्य जोहारे ॥५९॥
जयति अमित गुन नाम धाम लीला रहस्य रस राशी ।
जयति भुवन बहु विदित विभव वर लोक कदंब प्रकाशी ॥

जयति मोह मारादि मथन जै संत कंज बनवासी।
युगलअनन्यशरण जीवन धन जयति विहार विलाशी ॥६०॥

दोहा—विनय कांति पूरन प्रथम, भयो गयो दुख दूरि।
पढ़त सुनत मंगल विविधि, पैहै पिय पद धूरि ॥

इति श्रीयुगलअनन्यशरण विरचितायां मधुर-
मंजुमालायां प्रथमो विनय कान्तिः ॥ १ ॥